International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 3, March 2018
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

वर्तमान के वातायन से प्रेमचंद

डॉ. सुधांशु कुमार
हिन्दी शिक्षक,
शिमुलतला आवासीय विद्यालय, शिमुलतला (जमुई)–811316

सारांश

एक लेखक कभी मर नहीं सकता, उसकी रचनाएँ हमेशा जिंदा रहती हैं। हिन्दी साहित्य खासकर कथा–साहित्य आज जिस बुलंदी के मुकाम तक पहुंची है उसकी नीव में मुंशी प्रेमचन्द का नाम शामिल है। प्रेमचन्द का जन्म 31 जुलाई 1880 को वाराणसी के नजदीक लमही गांव में हुआ था। वैसे तो उनका मूल नाम धनपतराय था। उनके पिता अजायब राय एक डाकखाने में नौकरी करते थे। यहाँ तक तो प्रेमचंद का बचपन बिलकुल सपाट था, जिसके बारे में उन्होंने कहा कि ''मेरा जीवन सपाट, समतल मैदान है, जिसमें गड्ढ़ तो कहीं–कहीं है, पर टीलों, पर्वतों, घने जंगलों, गहरी घाटियों और खंडहरों का स्थान नहीं है।''[1] परन्तु इस जीवन का आनंद वे बहुत वर्षों तक नहीं उठा सके। प्रेमचंद जब मात्र आठ साल के थे तभी उनकी मां का निधन हो गया और वहीं से उनके जीवन में आमूल–चूल परिवर्तन का दौड़ भी शुरू हुआ। उन्होंने जीदगी की हकीकत को देखना और समझना शुरू किया। उनके पिता ने दूसरी शादी कर ली और प्रेमचंद को सौतेली मां के कठोर व्यवहार को भी झेलना पड़ा।

विशिष्ठ शब्द

परिवेश, प्रगतिशील, यथार्थ, वर्त्तमान, परिस्थिति, सांस्कृतिक, अनुभूतियाँ, सर्वहारा, संबंध, पूंजीवाद, श्रमिक, ठेठ, साधारणीकरण।

प्रेमचंद ने लगभग प्रत्येक विधा में जमकर लिखा। उनकी लेखनी वर्तमान परिवेश में लोगों के मर्म को झकझोड़ी है। प्रेमचन्द का रचनाकाल लगभग उनतीस वर्षों का है जिसमें उन्होंने विपुल साहित्य का सृजन किया। एक अकेले व्यक्ति ने गद्य विद्या को लगभग पूरी तरह साध लिया और ऐसे उपन्यास, कहानियां, निबन्ध, वैचारिक लेख तथा संपादकीय लिखे जो दूसरा फिर उस रूप में नहीं लिख पाया। जब हम गहराई से प्रेमचन्द्र की सामग्रियों खासकर कहानियों का अध्ययन करते हैं तो वर्तमान परिवेश ये कहानियाँ अपने कथ्य–शिल्प और पात्र के साथ और मुखर होता दीखता है। प्रेमचंद की कहानियाँ मुख्य रूप से वास्तविक जीवन पर आधरित होती है। वास्तविक जीवन देश, काल और जीवन की विभिन्न सत्–असत परिस्थितियों से निर्मित होता है अतएव इन तत्त्वों का एक स्थान पर संचयन और चित्रण करना कहानी में वातावरण उपस्थित करता है।

प्रेमचंद की कहानी की कथावस्तु और उसके संचालक पात्रों का सीधा संबंध उक्त स्थितियों से होता है अर्थात् उनका उद्भव सूत्र और संबंध देश में होगा या किसी विशिष्ट स्थान अथवा प्रदेश से होगा, इनका भी संबंध किसी काल विशेष से होगा। इसके उपरांत इन दोनों का सापेक्षित संबंध भी किसी काल विशेष से होगा। इसके उपरांत इन दोनों का सापेक्षिक संबंध जीवन की किन्हीं परिस्थितियों से होगा। इन

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 3, March 2018
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

परिस्थितियों की सीमा में समस्त मानवीय राग, द्वेष, अनुभूतियाँ और हर प्रकार के संघर्ष आ सकते हैं। अगर इस दिशा में किसी प्रकार की अस्वाभाविकता और अज्ञानता उपस्थित हुई तो यह निश्चित है कि कहानी असफल हो जायेगी और उसकी संवेदना से किसी भी प्रकार पाठक का साधरणीकरण न हो पायेगा।'[2]

प्रेमचंद जी ने अनेक ऐतिहासिक कहानियाँ भी लिखीं, जो काफी सफल भी हुईं। ऐतिहासिक कहानियों में देश–काल का प्रामाणिक एवं मार्मिक चित्र प्रस्तुत करना कहानीकार के लिए कठिन चुनौती होती है। कहना न होगा कि प्रेमचंदजी इस कसौटी पर पूर्णरूपेण खरे उतरे हैं। भारतवर्ष में बुंदेलखंड अपनी वीरता के लिए प्रसिद्ध रहा है। इसमें भी ओरछा राज्य के अनेक राजाओं की वीरता की कहानियों ने भारतवासियों के मस्तक को उंचा उठा दिया। 'राजा हरदौल' कहानी में एक अत्यंत लोकप्रिय बुंदेल राजा हरदौल की वीरता और वीरभूमि ओरछा की विशिष्ट पहचान को जीवंत रूप में प्रस्तुत किया गया है–''ओरछे को कभी ऐसा सर्वप्रिय राजा नसीब न हुआ था। वह उदार था, न्यायी था, विद्या और गुण का ग्राहक था, पर सबसे बड़ा गुण जो उसमें था वह उसकी वीरता थी। उसका वह गुण हद दर्जे को पहुंच गया था। जिस जाति के जीवन का अवलम्ब तलवार पर है, वह अपने राजा के किसी गुण पर इतना नहीं रीझती जितना उसकी वीरता पर। हरदौल अपने गुणों से अपनी प्रजा के मन का भी राजा हो गया, जो मुल्क और माल पर राज करने में भी कठिन है।''[3]

बहादुर ओरछा वासियों को दिल्ली के नामी तलवारबाज कादिर खाँ ने चुनौती दी–'खुदा का शेर दिल्ली का कादिर खाँ ओरछे आ पहुँचा है। जिसे अपनी जान भारी हो, आकर अपने भाग्य का निपटारा कर ले।''[4] इस चुनौती की जो प्रतिक्रिया ओरछावासियों पर हुई वह प्रेमचंद के शब्दों में देखने को मिलती है–''ओरछे के बड़े–बड़े बुंदेले सूरमा वह घमंड–भरी वाणी सुनकर गरम हो उठे। फाग और डफ की तान के बदले ढोल की वीरध्वनि सुनायी देने लगी। हरदौल का अखाड़ा ओरछे के पहलवानों का सबसे बड़ा अड्डा था। संध्या को यहाँ सारे शहर के सूरमा जमा हुए। कालदेव और मालदेव बुंदेलों की नाक थे, सैकड़ों मैदान मारे हुए। वे दोनों पहलवान कादिर खाँ का घमंड चूर करने के लिए गए। दूसरे दिन किले के सामने तालाब के किनारे बड़े मैदान में ओरछे के छोटे–बड़े सभी जमा हुए। कैसे–कैसे सजीले, अलबेले जवान थे,–सिर पर खुशरंग बांकी पगड़ी, माथे पर चंदन का तिलक, हाथों में मर्दानगी का सरूर, कमर में तलवार। और कैसे–कैसे बूढ़े थे,–तनी हुई मूंछें, सादी पर तिरछी पगड़ी, कानों में बंधी हुई दाढ़ियाँ, देखने में तो बूढ़े, पर काम में जवान, किसी को कुछ न समझने वाले। उनकी मर्यादा चाल–ढाल नौजनवानों को लजाती थी। हर एक के मुंह से वीरता की बातें निकल रही थी। नौजवान कहते थे–देखें आज ओरछे की लाज रहती है या नहीं। पर बूढ़े कहते–ओरछे की हार कभी नहीं हुइ न होगी।[5] वीरों का यह जोश देखकर राजा हरदौल ने बड़े जोर से कह दिया–''खबरदार, बुंदेलों की लाज रहे या न रहे, पर उनकी प्रतिष्ठा में बल न पड़ने पाये–यदि किसी ने औरों को यह कहन का अवसर दिया कि ओरछेवाले तलवार से न जीत सके तो धुंधली कर बैठे, वह अपने को जाति का शत्रु समझे।''[6] इस अनुच्छेद में ओरछावासियों की वीरता, मर्यादा, स्वाभिमान, परिधान आदि पर अत्यंत प्रामाणिक एवं सजीव प्रकाश पड़ता है।

परिवेश के अंतर्गत परिस्थिति चित्रण का विशिष्ट महत्व होता है। ऐसी वीर जाति को जब पराजय का अपमान मिलता है तो उसकी विकलता ऐसे शब्दों में देखी जा सकती है–''आज का दिन बीता, रात आयी, पर बुंदेलों की आंखों में नींद कहाँ। लोगों ने करवटें बदलकर रात काटी जैसे दुःखित मनुष्य विकलता से सुबह का वाट जोहता है, उसी तरह बुंदेल रह–रहकर आकाश की तरफ देखते और उसकी धीमी चाल पर झुंझलाते थे। उनके जातीय घमंड पर गहरा घाव लगा था। दूसरे दिन ज्योहीं सूर्य निकला,

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 3, March 2018
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

तीन लाख बुंदेले तालाब के किनारे पहुंचे। जिस समय मालदेव शेर की तरह अखाड़े की तरफ चला, दिलों में धड़कन–सी होने लगी। कल जब कालदेव अखाड़े में उतरा था, बुंदेलों के हौसले बढ़े हुए थे, पर आज वह बात न थी। हृदय में आशा की जगह डर घुसा हुआ था।''[7]

प्रेमचंद भाषा के भी बादशाह थे। इसी की बदौलत प्रेमचंद भाव पक्ष के इतने विस्तृत और प्रसार में जाने में समर्थ हुए। ''उनके भाषा पक्ष में अरबी, फारसी फिर इनके संयोग से उर्दू, दूसरी ओर हिन्दी, स्टैण्डर्ड हिन्दी, फिर बोल–चाल की हिन्दी और फिर उर्दू और हिन्दी के सुन्दर समन्वय से हिन्दुस्तानी, ये तीन दिशाएँ अपूर्व हैं।''[8]

प्रेमचंद की कहानियों में भाषी संबंधी कुछ बानगी हम देख सकते हैं–'दिल की रानी' में उर्दू भाषा का यह सुन्दर रूप द्रष्टव्य है–''तुम कहते हो, खुदा ने तुम्हें ऐश करने के लिए पैदा किया है। मैं कहता हूँ वह कुफ्र है, खुदा ने इंसान को बंदगी के लिए पैदा किया है, और इसके खिलाफ जो कोई कुछ कहता है वह काफिर है, जहन्नुमी हैं रसूलेपाक, हमारी जिन्दगी को पाक करने के लिए आए थे, हमें सच्चा इंसान बनाने के लिए आये थे, हमें हराम की तालीम देने के लिए नहीं। तैमूर दुनिया को इस कुफ्र से पाक कर देने का बीड़ा उठा चुका है। रसूले पाक के कदामों की कसम, मैं बेरहम नहीं हूँ, जालिम नहीं हूँ, खूँखार नहीं हूँ, लेकिन कुफ्र की सजा मेरे ईमान में मौत के सिवा कुछ नहीं है।''[9]

प्रेमचंद की कहानियों में अपने देश–काल और समाज के यथार्थ जितना चित्रण हुआ है उससे कम विदेशों में नहीं। प्रेमचंद की कुछ कहानियों का अनुवाद जापानी भाषा में जापान के पत्र में प्रकाशित किया गया और प्रेमचंद को सूचना दी कि उसका भव्य स्वागत हुआ है। इस संदर्भ में प्रेमचंद ने शिवपूजन सहाय को लिखा–''आपको यह सुनकर आनंद होगा कि मेरी कई कहानियों के जापानी भाषा के अनुवाद प्रकाशित हुए हैं और वहाँ की सर्वश्रेष्ठ पत्रिका में प्रकाशित हुए हैं। जापानी जनता ने उनका वही सम्मान किया है जो टाल्सटाय और चेखव की कहानियों का करते हैं।''[10]

प्रेमचंद की कहानियों यथार्थ की भूमि पर अंगद पांव की तरह आज भी अडिग है, जिसे हिला–डुला पाना वर्तमान परिवेश में भी यथार्थ को चुनौती देने के समान है। इन्होंने हर विधा में पूरजोर कलम चलाई। 'ऐतिहासिक कहानियों में स्थिति और वातावरण का निर्माण ही ऐतिहासिक कहानियों की प्रमुख विशेषता है। कार्य–वस्तु से संबंधित देश–काल और परिस्थिति का पूरा–पूरा ज्ञान और उसकी सहज अभिव्यक्ति ऐसी कहानियों की मूल आत्मा है। अगर इस दिशा में किसी प्रकार की अस्वाभाविकता और अज्ञानता उपस्थित हुई तो यह निश्चित है कि कहानी असफल हो जायेगी और उसकी संवेदना से किसी भी प्रकार पाठक का साधरणीकरण न हो पायेगा।'[11] देश–काल नायक की रंग–स्थली है और उसका अंकन यथार्थता का पूर्ण आभास लिए हुए सावधनी के साथ किया जाता है। इस संबंध में प्रेमचंद जी का विचार है–''साहित्यकार बहुधा अपने देश–काल से प्रभावित होता है। जब कोई लहर देश में उठती है, तो साहित्यकार के लिए उससे अविचलित रहना असंभव हो जाता है और उसकी विशाल आत्मा अपने देश–बन्धुओं के कष्टों से विकल हो उठती है और इस तीव्र विकलता में वह रो उठता है, पर उसके रुदन में भी व्यापकता होती है।''[12]

प्रेमचंद परिस्थितियों के सजीव चित्रण के द्वारा आगे आने वाली घटना की तैयारी करने लगते हैं। 'नमक का दारोगा' कहानी का यह अनुच्छेद इस मान्यता को संपुष्ट करता है–''जाड़े के दिन थे और रात का समय। नमक के सिपाही, चौकीदार नशे में मस्त पड़े थे। मुंशी वंशीधर का यहाँ आए अभी छह महीनों से अधिक न हुए थे लेकिन इस थोड़े से समय में ही उन्होंने अपनी कार्य–कुशलता और आचरण से

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 3, March 2018
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

अफसरों को मोहित कर लिया था। अफसर लोग उन पर बहुत विश्वास करते थे। नमक के दफ्तर से एक मील पूरब जमुना बहती थी, उस पर बाँस का पुल बना हुआ था। दारोगाजी किवाड़ बंद कर मीठी नींद से सो रहे थे। अचानक आंख खुली तो नदी के प्रवाह की जगह गाड़ियों की गड़गड़ाहट तथा मल्लाहों का कोलाहल सुनाई दिया। उठ बैठे। इतनी रात गए गाड़ियां क्यों नदी के पार जाती हैं ? अवश्य कुछ न कुछ गोलमाल है। तर्क ने भ्रम को पुष्ट किया। वर्दी पहनी, तमंचा जेब में लिया और बात की बात में घोड़ा बढ़ाए हुए पुल पर आ पहुँचे। गाड़ियों की एक लम्बी कतार पुल से पार जाते देखी। डॉट कर पूछा, किसकी गाड़ियाँ हैं, थोड़ी देर तक सन्नाटा रहा। आदमियों में कुछ कानाफूसी हुई तब आगे वाले गाड़ीवान ने कहा, पंडित अलोपीदीन की। कौन पंडित अलोपीदीन ? दातागंज के। मुंशी वंशीधर चौंके। पंडित अलोपीदीन इस इलाके के सबसे बड़े और प्रतिष्ठित जमींदार थे। लाखों रुपये का लेन–देन करते थे।''[13] यह कहानी आज भी उतना ही प्रासंगिक है जितना उस दौड़ में था।

प्रेमचंद के कहानियों के परिप्रेक्ष्य में आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का यह कथन अत्यंत महत्वपूर्ण है–''अगर आप उत्तर भारत की समस्त जनता के आचार–विचार, भाषा–भाव, रहन–सहन, आशा–आकांक्षा, दुख और सुख, सुझ–बूझ जानना चाहते हैं तो प्रेमचंद से उत्तम परिचायक आपको नहीं मिल सकता। झोपड़ियों से लेकर महलों तक, खोंमचावालों से लेकर धरा सभाओं तक, आपको इतने कौशलपूर्वक और प्रामाणिक भाव से कोई नहीं ले जा सकता है। आप बेखटके प्रेमचंद का हाथ पकड़कर मेड़ों पर गाते हुए किसान को, अन्तःपुर में मान किये बैठी प्रियतमा को, कोठों पर बैठी बार–बनिता को, रोटियों के लिए ललकते भिखमंगों को, लूट–परामर्श में लीन गोयेन्नों को, ईष्यापरायण प्रोफेसरों को, दुर्बल हृदय बैंकरों को, साहस परायण चमारिन को, ढोंगी पंडितों को, पफरेबी पटवारी को, नोचाशय अमीर को देख सकते हैं और निश्चिन्त होकर विश्वास कर सकते हैं कि जेा कुछ आपने देखा वह गलत नहीं है। उससे अधिक सच्चाई से दिखा सकने वाले परिदर्शक को अभी हिन्दी–उर्दू की दुनिया नहीं जानती।''[14]

प्रेमचंद हर प्रकार के शोषण के खिलाफ थे, चाहे वह किसान–मजदूरों का शोषण हो, चाहे वेश्याओं का हो, चाहे विधवाओं का हो या अन्य किसी प्रकार का हो। वे खुद को मजदूर ही मानते थे। जब नौकरी से इस्तीफा देकर गांव में रह रहे थे, उस समय गांव के किसानों की समस्याओं से रू–ब–रू हो रहे थे। गांव के अनपढ़ लोग यह समझ नहीं पाते कि बिना खेती–बारी किए उनका गुजारा कैसे होता है। वे हंसकर कहते–''भाई मैं आपसे कुछ माँगने तो नहीं आता। मैं भी आप की ही तरह मजदूरी करता हूँ। अंतर केवल इतना है कि तुम फावड़ा चलाते हो और मैं कलम चलाता हूँ।''[15]

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि प्रेमचंद की कहानियाँ वर्तमान परिदृश्य में भी उतना ही प्रासंगिक है जितना उस समय जब रचना की गयी थी, रही होगी। प्रेमचंद के प्रथम दर्शन का रेखाचित्र खींचते हुए जैनेन्द्र ने बिल्कुल ठीक ही लिखा है–''बड़ी घनी मूँछें, पाँच रुपये वाली इमली की चादर, जो काफी पुरानी और चिकनी थी। बालों ने आगे आकर माथे को कुछ ढँक सा लिया था और माथा छोटा मालूम होता था। सिर जरुरत से छोटा प्रतीत हुआ। मामूली धोती पहने थे, जो घुटनों से जरा नीचे तक आ गयी थी। आँखों में खुमारी भरी थी।''[16] निःसंदेह प्रेमचंद कालजयी रचनाकर हैं।

संदर्भ सूची :

1. प्रेमचन्द : जीवन, कला और कृतित्व, हंसराज रहबर, पृ. 01.
2 हिन्दी–कहानियों की शिल्प–विध का विकास, डॉ. लक्ष्मी नारायण लाल, पृ. 338.
3 मानसरोवर, भाग–छह, प्रेमचंद, पृ. 10.

4 वही, पृ. 11
5. वही, पृ. 15.
6. मानसरोवर, भाग–छह, प्रेमचंद, पृ. 11.
7. वही।
8. हिन्दी–कहानियों की शिल्प–विधि का विकास, डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल, पृ. 167.
9. वही 45.
10. कलम का मजदूर : प्रेमचंद, मदन गोपाल, पृ. 196.
11. हिन्दी–कहानियों की शिल्प–विधा का विकास, डॉ. लक्ष्मी नारायण लाल, पृ. 338.
12. प्रेमचंदयुगीन भारतीय समाज, डॉ. इन्द्रमोहन कुमार सिन्हा, पृ. 1.
13. मानसरोवर, भाग–पाँच, पृ. 165.
14. हिन्दी साहित्य : उद्‌भव और विकास, डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी, पृ. 20.
15. कलम का मजदूर, प्रेमचंद, मदन गोपाल, पृ. 194.
16. वही, पृ. 185.